RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मुबारकपुर हथकरघा उद्योग में महिलाओं की दशा का अध्ययन

[1]डॉ0 कौशलेन्द्र विक्रम मिश्र; [2]लवकुश सिंह

[1]एसोशिएट प्रोफेसर, श्री गांधी पी0जी0 कालेज मालटारी, आजमगढ़ उ0प्र0 (सम्बद्धः वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल वि0वि0 जौनपुर उ0प्र0)
[2]शोध छात्र अर्थशास्त्र विभाग, श्री गांधी पी0जी0 कालेज मालटारी, आजमगढ़ उ0प्र0 (सम्बद्धः वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल वि0वि0 जौनपुर उ0प्र0)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15March2019

Keywords
हथकरघा उद्योग, समृद्धि, विविधता

ABSTRACT

हथकरघा उद्योग भारत की विरासत का एक हिस्सा है और देश की समृद्धि और विविधता के लिए बुनकरों की कलात्मकता का परिचय देता है। उत्तर प्रदेश भारत के प्रमुख राज्यों में से एक है जिसका कुल क्षेत्रफल 240928 वर्ग किमी0 है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का पांचवा राज्य है। जबकि जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश में कुल 75 जनपद हैं। प्रदेश में चार जनपद–वाराणसी, आजमगढ़, गोरखपुर एवं मऊ को हथकरघा के लिए विशिष्ट स्थान प्राप्त है। हथकरघा उद्योग में आजमगढ़ शहर, वाराणसी के बाद दूसरे स्थान पर है। मुबारकपुर, आजमगढ़ जनपद का नगर पालिका परिषद (टाउन एरिया) है, जो पर्यटक स्थल होने के साथ–साथ बुनाई का प्रमुख केन्द्र भी है। बुनाई मुबारकपुर शहर का प्रमुख व्यवसाय है। मुबारकपुर की आकर्षक साड़ियां देश विदेश में प्रसिद्ध हैं। जनगणना 2011 के अनुसार मुबारकपुर शहर की कुल आबादी 70,365 है, जिसमें 49 प्रतिशत पुरुष एवं 51 प्रतिशत महिलाएं हैं। हथकरघा उद्योग महिलाओं के रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मुबारकपुर हथकरघा पारम्परिक ढ़ांचे पर आधारित होने के कारण नई नई तकनीकों के सामने प्रतिस्पर्धा करने में बहुत सारी कठिनाइयों व समस्याओं से ग्रसित है।

प्रस्तावनाः–

हथकरघा उद्योग के पारम्परिक कौशल में, हमारी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने के लिए भारत सरकार ने 1956 में ही बुनकर सेवा केंद्रों की स्थापना का फैसला किया था। इसके तहत वर्तमान में 28 बुनकर सेवा केंद्र कार्यरत हैं। इसी प्रकार हथकरघा उद्योग को एक स्थाई आधार प्रदान करने एवं ''भारत हथकरघा ब्राण्ड'' को बढ़ावा देने के लिए 7 अगस्त 2015 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा पहला ''राष्ट्रीय हथकरघा दिवस'' घोषित किया गया। स्थाई विपणन प्रदान करने के लिए हैण्डलूम हाट (जनपद मार्केटिंग काम्पलेक्स) की स्थापना की गई है, जिसका उद्घाटन 9 अक्टूबर 2014 को वस्त्र राज्यमंत्री द्वारा किया गया। उत्तर प्रदश भारत में सर्वाधिक जनसंख्याा वाला राज्य है, वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश में कुल 75 जनपद हैं। वर्ष 2011 में राज्य की कुल जनसंख्या 199281477 थी, जो कि देश की कुल जनसंख्या का 16.49 प्रतिशत है। यहां कुल शहरी जनसंख्या 4.45 करोड़ थी, जबकि ग्रामीण जनसंख्या 15. 53 करोड थी। प्रदेश में बुनकरों को वाराणसी और आजमगढ़ के आस पास के क्षेत्रों में अनुकूल वातावरण मिला जिससे पूर्वी उ0प्र0 में हथकरघा उद्योग का विकास तेजी से हुआ है। प्रदेश में चार जिले–वाराणसी, आजमगढ़, गोरखपुर एवं मऊ को हथकरघा के लिए विशिष्ट स्थान प्राप्त है। हथकरघा उद्योग में आजमगढ़ शहर, वाराणसी के बाद दूसरे स्थान पर है।

आजमगढ़, उ0प्र0 के आजमगढ़ मण्डल का एक जनपद है, इसका जिला मुख्यालय भी आजमगढ़ में है। मुबारकपुर, आजमगढ़ जनपद का नगर पालिका परिषद (टाउन एरिया) है, जो पर्यटक स्थल होने के साथ–साथ बुनाई का प्रमुख केन्द्र भी है। बुनाई मुबारकपुर शहर का प्रमुख व्यवसाय है। मुबारकपुर की आकर्षक साड़ियां देश विदेश में प्रसिद्ध हैं। जनगणना 2011 के अनुसार मुबारकपुर शहर की कुल आबादी 70,365 है, जिसमें 49 प्रतिशत पुरुष एवं 51 प्रतिशत महिलाएं हैं। इसप्रकार आजमगढ़ लिंगानुपात 1019 के साथ मुबारकपुर शहर का लिंगानुपात 950 है जो कि देश के लिंगानुात 943 से अधिक है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मुबारकपुर शहर की भौगोलिक स्थिति

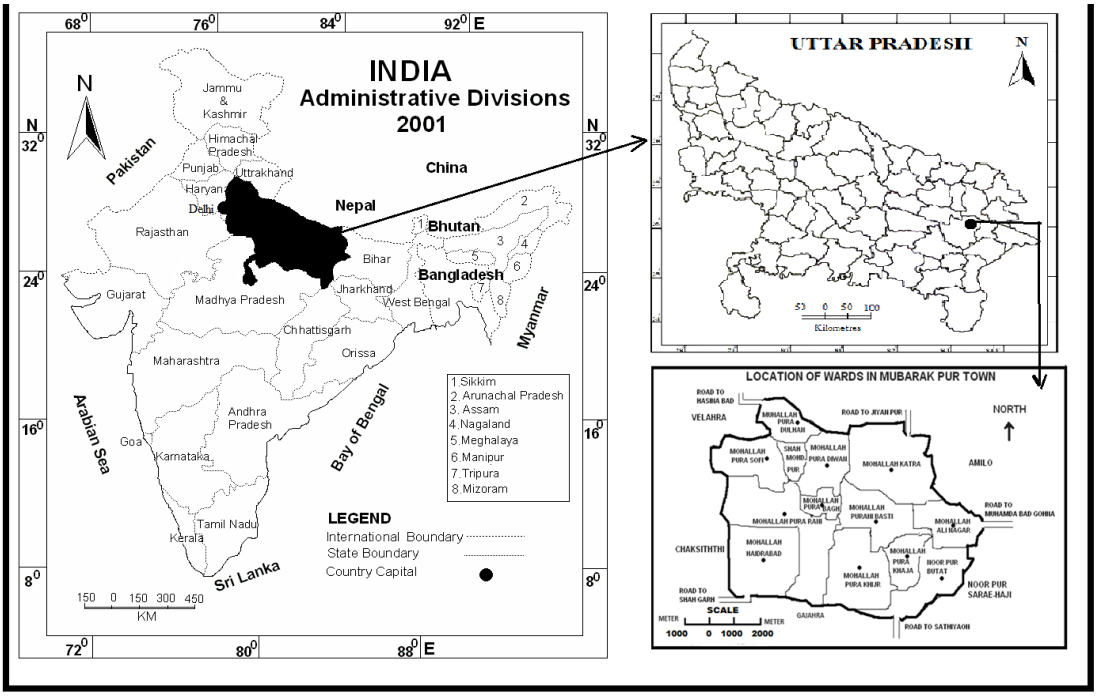

उपरोक्त मानचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुबारकपुर शहर 26.09^0 उत्तर व 83.29^0 पूर्व अर्थात् 26^0 09′ अक्षांश एवं 83^0 29′ देशांतर पर स्थित है। जिला मुख्यालय आजमगढ़ से मुबारकपुर शहर की दूरी उत्तर पूर्व की ओर लगभग 13 किलोमीटर है।

साहित्य की समीक्षाः–

शोधार्थी को शोधकार्य करने में साहित्य समीक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है साहित्य समीक्षा के द्वारा ही शोधकार्य में प्रयुक्त होने वाली विधियों व प्रविधियों का ज्ञान प्राप्त होता है प्रस्तुत लेख में सहायक साहित्य का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् हैः–

श्रीनिवासाचार्य ने (1965) में हथकरघा उद्योग की जांच की और हथकरघा उद्योग के इतिहास व प्रतिस्पर्द्धा के युग में इसकी संरचना का वर्णन किया और उन्होंने कुछ उपचारात्मक उपायों का भी सुझाव दिया।

रजनी सिन्हा ने (2005) में भारत की महिलाओं की आर्थिक स्थिति और आर्थिक विकास का विश्लेषण किया है और महिला भागीदारी में क्षेत्रीय पैटर्न भी पाया है।

एम0एस0 देवी (2011) में भारत में महिला कामगारों की दर एवं हथकरघा कामगारों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और बुनकरों के कल्याण में सुधार के लिए कुछ नीतिगत विकल्पों का सुझाव दिया है

तवहीद यूसुफ और एट अल (2013) में श्रीनगर शहर के रेशम बुनकरों के सामाजिक आर्थिक प्रोफाइल का विश्लेषण किया है। अध्ययन से पता चलता है कि बुनकरों की स्थिति चिंताजनक है क्योंकि वे निरक्षरता, वित्तीय बाधाओं, स्वास्थ्य समस्याओं, कम वेतन और न्यून सरकारी सहायता के कारण कमजोर हैं।

तसनीम शाजमी और प्रो0 अब्दुल मुनीर (2014) ने मुबारकपुर हथकरघा उद्योग का अध्ययन किया और पाया कि पडोसी जिला मउ आदि आस पास के क्षेत्रों में पावरलूम के प्रयोग से मुबारकपुर हथकरघा को कडी प्रतियोगिता का सामना करना पड रहा है जिससे महिलाओं की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है साथ अधिक शारीरिक श्रम के कारण कई प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हैं

डॉ फातिमा मेहर सुल्तान एवं मेहरुन्निसा (2017) ने मउ जनपद के हैंडलूम व पावरलूम क्षेत्र में महिलाओं की कार्य सहभागिता का अध्ययन किया और पाया कि अशिक्षा व परिवार के बड़े आकार के कारण महिलाओं की सहभागिता में वृद्धि हुई है परिणामस्वरूप महिलाओं को सिरदर्द व स्वास की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बीते कुछ वर्षों से पावरलूम क्षेत्र बिजली की कमी, बाजार की अपूर्णता व राजनैतिक कारणों से लोगों की आर्थिक स्थिति में गिरावट आई है। इसप्रकार सरकार के द्वारा कल्याणकारी योजनाओं का प्रयोग करके महिलाओं की दशा सुधारने में सार्थक प्रयास किया जाना चाहिए।

शोध की आवश्यकताः–

मध्यकाल के दौरान कुशल मुस्लिम बुनकर मुगलों के साथ आए और भारत में शिल्प व बुनाई कला का प्रचार प्रसार किया। आज भी मुबारकपुर शहर में मुस्लिम जनसंख्या अधिक होने के साथ–साथ मुस्लिम संस्कृति व सभ्यता की

स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है। मुबारकपुर में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है, दूसरी ओर हथकरघा उद्योग लोगों की जीविका का महत्वपूर्ण साधन है, अतः मुबारकपुर के हथकरघा उद्योग में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन एक शोधार्थी के लिए उपयुक्त व रुचिकर होना स्वाभाविक है।

प्रस्तावित शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य :–

1.हथकरघा उद्योग में कार्यरत महिलाओं की स्थिति का अवलोकन करना।

2.मुबारकपुर में हथकरघा उद्योग की समस्याओं का पता लगाना एवं उनके समाधान खोजना।

मुबारकपुर हथकरघा उद्योग में महिलाओं की स्थितिः–

हथकरघा उद्योग भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्राचीनतम शिल्प का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। श्रम की गहनता, कम पूंजी लागत, बिजली का न्यूनतम उपयोग, पर्यावरण के अनुकूल, छोटा व लचीलापन उत्पादन, बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप नवाचार और अनुकूलन क्षमता के लिए हथकरघा उद्योग प्रसिद्ध है। हथकरघा उद्योग की शिल्प कला पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर हस्तान्तरित और विकसित हुई है। प्राचीन काल से ही शिलाई, बुनाई व कढ़ाई में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, अतः हथकरघा उद्योग में महिलाओं का योगदान सर्वाधिक होना स्वाभाविक है। आजमगढ़ जनपद तमसा नदी के पावन तट पर स्थित गंगा और घाघरा के मध्य बसा हुआ है। यह जनपद आदिकाल से ही मनीषियों, ऋषियों, चिन्तकों, विद्वानों, और स्वतंत्रता सेनानियों की जन्म स्थली रही है। पर्यटन की दृष्टि से महराजगंज, दुर्वासा, मुबारकपुर, मेंहनगर, भंवरनाथ मंदिर और अवन्तिकापुरी आदि विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। विक्रमजीत के पुत्र आजम खान, जो एक शक्तिशाली जमींदार था, ने शाहजहां के शासनकाल के दौरान 1665 ई0 में आजमगढ़ की स्थापना करवाई थी।

मुबारकपुर आजमगढ़ का नगरपालिका परिषद (टाउन एरिया) है। मुबारकपुर में हथकरघा उद्योग, कृषि के बाद असंगठित क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है और ग्रामीण एवं अर्धग्रामीण लोगों के आजीविका का महत्वपूर्ण साधन है। हथकरघा उद्योग के द्वारा महिलाओं ने भारत की आर्थिक समृद्धि में काफी योगदान दिया है। हथकरघा उद्योग एक मात्र ऐसा विनिर्माण क्षेत्र है जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं काम करती हैं और उत्पादित वस्तुएं महिलाओं द्वारा ही पहनी जाती हैं। मुबारकपुर शहर में मुस्लिम संस्कृति की बहुलता है। बेरोजगारी, गरीबी, कम आय, अशिक्षा, परिवार के बड़े आकार के कारण दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हथकरघा उद्योग में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। नरसिम्हा रेड्डी के अनुसार, उत्पादन कार्य में महिलाओं की भूमिका को घर के बाहर स्वीकार नहीं किया गया। जनगणना 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या लगभग 46.14 लाख है, जिसमें 22.85 लाख पुरुष एवं 23.28 लाख महिलाएं हैं। जिले में महिलाओं की संख्या, पुरुषों से अधिक है। लिंगानुपात की स्थिति को निम्नलिखित सारिणी और आरेख के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है:–

लिंगानुपात की स्थिति (1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या)

भारत	उत्तर प्रदेश	आजमगढ़	मुबारकपुर
943	912	1019	950

Source:- Census 2011 (District Handbook)

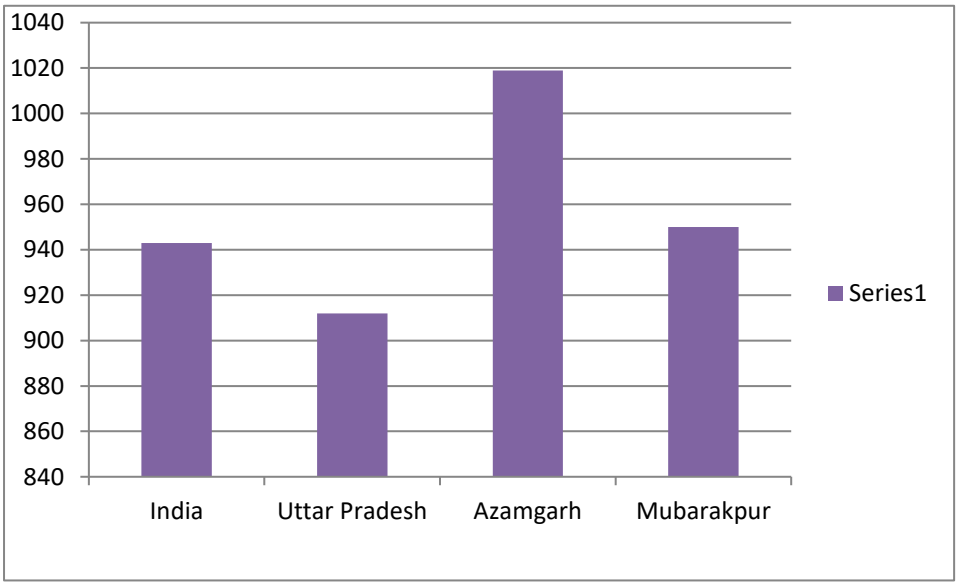

सारिणी और आरेख से स्पष्ट है कि जनपद में लिंगानुपात 1019 है, जो कि देश के लिंगानुपात 943 एवं प्रदेश के लिंगानुपात 912 से भी अधिक है जबकि मुबारकपुर शहर में लिंगानुपात 950 है जो कि देश व प्रदेश से अधिक किन्तु जिले के लिंगानुपात 1019 से काफी कम है। मुबारकपुर शहर में आज भी पारम्परिक ढ़ांचा की झलक दिखाई पड़ती है जिससे महिलाओं को घर से बाहर काम काज के लिए उचित नही समझा जाता है। दूसरी ओर परिवार के बड़े आकार के कारण भरण पोषण की समस्या के लिए महिलाओं की कार्य सहभागिता में वृद्धि हुई है

मुबारकपुर में हथकरघा उद्योगों की समस्याएंः–

बदलते आर्थिक परिदृश्य व नई औद्योगिक नीति 1991 में अमूलचूल परिवर्तन से छोटे उद्योग धन्धे पिछडते चले गए हैं। नई नीति में मुख्य रूप से तीन सुधार –उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति एक साथ अपनाए गए। उदारीकरण के अन्तर्गत सरकार द्वारा उद्यमियों के लिए नियमों में काफी छूट प्रदान की गई दूसरी ओर निजीकरण की नीति से सरकार ने सरकारी क्षेत्र के कुछ महत्वपूर्ण उद्योगों को छोडकर शेष सभी उद्योगों में निजी उद्यमियों की कार्यसहभागिता को स्वीकार किया। वहीं वैश्वीकरण के अन्तर्गत भारतीय उद्योगों विश्व बाजार में चरणबद्ध तरीके से खुली प्रतियोगिता के लिए छोड़ दिया गया। नई नीति में हथकरघा उद्योगों पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया जिसके कारण इन उद्योगों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैः–

1. वैश्वीकरण के दौर में हथकरघा उद्योग को बढ़ती हुई प्रतियोगिता का सामना करना पड़ रहा है, इसके कारण जहां एक ओर महिलाओं के कामकाज में बढ़ोत्तरी हुई है, वहीं दूसरी ओर उनके आय स्तर में कमी आयी है जिससे महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
2. विपणन सम्बन्धी जानकारी के अभाव में कच्चेमाल सम्बन्धित कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
3. मुबारकपुर के बुनकरों को बाजार सम्बन्धी उतार चढ़ाव का ज्ञान नही हो पाता जिसके कारण उत्पादन का सही दाम प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं। अधिकांश बुनकर बाजार मांग के अनुरूप अपने को परिवर्तित कर पाने में भी असमर्थ रहे हैं।
4. मुबारकपुर के बुनकर विज्ञापन के महत्व से अनभिज्ञ हैं जबकि आज के गलाकाट प्रतियोगिता में विज्ञापन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस सम्बन्ध में बॉमल ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि विज्ञापन किसी भी उद्योग या फर्म के जीवन मरण का प्रश्न बन जाता है।
5. इन उद्योगों को पैमाने की लागतों का सामना करना पड़ रहा है। बड़ी फर्में पैमाने की बचतों का लाभ उठाकर कम लागत की वस्तुएं बाजार में कम कीमत पर उपलब्ध कराती हैं वहीं दूसरी ओर हथकरघा उद्योग पैमाने की अमितव्ययिताओं से ऊँची लागतों के कारण प्रतियोगिता करने में पिछड़ रहे हैं।
6. मुबारकपुर के बुनकर पूँजी की कमी से जूझ रहे हैं। स्थाई पूँजी के अभाव में एक ओर जहां उन्नत तकनकों का प्रयोग करने में असमर्थ हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कार्यशील पूँजी की कमी के कारण कच्चे माल को समय से प्राप्त करने एवं उत्पादित माल को भण्डारण करने में असमर्थ रहते हैं।
7. मुबारकपुर के शिल्पकारों के आर्थिक, सामाजिक व आजीविका सम्बन्धी विश्वसनीय आंकड़ों का अभाव है जिसके कारण नीति नियन्ताओं द्वारा उनके भावी विकास की रणनीति बनाना कठिन हो जाता है। आंकड़ों की अनुपस्थिति के कारण उद्योगों की अन्तरक्षेत्रीय तुलना में बाधा उत्पन्न होती है।
8. मुबारकपुर की महिला शिल्पकारों के ऊपर जनसंख्या के दबाव एवं रोजगार के अवसरों की कमी के कारण जीवन निर्वाह के लिए कार्य के घण्टों में वृद्धि हुई है जबकि उनके रहन–सहन व खान–पान के स्तरों में कोई सुधार नहीं हुआ। अधिकांश बुनकरों के घर कच्चे एवं संकरे रास्ते पर वेन्टिलेशनरहित बने होते हैं, जिसके अन्दर वे खाना बनाने खाने से लेकर कढ़ाई–बुनाई व करघे के अन्य काम करते हैं इससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
9. मुबारकपुर शहर में बिजली की आपूर्ति बहुत कम है जिससे वहां के बुनकर पारम्परिक लाइट जैसे लालटेन, मोमबत्ती, टार्च आदि का प्रयोग करके बुनाई का कार्य करते हैं जिससे उनको सिरदर्द व आँख की रोशनी सम्बन्धी बीमारी आम बात हो जाती है।

मुबारकपुर हथकरघा उद्योगों के समाधान हेतु सुझावः–

हथकरघा उद्योग को गलाकाट प्रतियोगिता से बचाने के लिए रोजेन्सटीन रोडां के 'बिगपुश थ्योरी' की तरह बड़े प्रयास की आवश्यकता हैः–

1. हथकरघा उद्योग को बढ़ती हुई प्रतियोगिता से संरक्षित करने के लिए सरकार को संरक्षात्मक उपाय किए जाने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में हथकरघा उद्योग को प्रारम्भिक उद्योग मानकर संरक्षण के ''शिशु उद्योग तर्क'' का सहारा लिया जा सकता है जिसके अनुसार **प्रथमतः**–इन उद्योगों के लिए आधारभूत संरचनाओं का विकास एवं उन्नत तकनीकि के प्रयोग पर बल दिया जाना चाहिए **दूसरी ओर**–इन उद्योगों को ''मिल का टेस्ट'' भी पास किया जाना आवश्यक है जिसके अनुसार संरक्षण उन्हीं हथकरघा इकाइयों को देना चाहिए जिनके पनपने की पूर्ण

सम्भावना हो और संरक्षण हटने के बाद अपनी हानियों का पुनर्भुगतान कर सकें।

2. बॉमल के अनुसार विज्ञापन किसी उद्योग के जीवन–मरण का प्रश्न बन सकती हैं अतः इन उद्योगों की वस्तुओं के विपणन के लिए विज्ञापन व प्रचार प्रसार के विविध माध्यमों एवं तरीकों से बुनकरों को जागरूक किए जाने के साथ साथ सरकार के अनुदानात्मक व सहयोगपूर्ण कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।
3. पूंजी की कमी से जूझ रहे बुनकरों के लिए किसाना को दिए जाने वाली के0सी0सी0 की तरह साख सुविधा उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
4. शहर की बालिकाओं के लिए स्थानीय स्तर पर विद्यालय व महाविद्यालय सीापित किए जाने की आवश्यकता है जिसमें व्यावसायिक पाठ्यक्रम को अनिवार्य रूप से सम्मिलित होना चाहिए।
5. बुनकारों के लिए कम लागत योजनाओं के तहत बिजली व पानी की पर्याप्त आपूर्ति होनी चहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. Dr. Ruby Jain and Rachana Goswami Strategy for Sustainable Development of Handloom Industry Global Journal of Finance and Management, Volume 6, Number 2 (2014)
2. Dr. M.L. Jhingan, 2019 sixth edition, International Economics.
3. Annual report, Ministry of textiles, 2015-16
4. Press Information Bureau Release, Ministry of Textiles, 2017
5. Narasimha Reddy. D. “Gender and Trade policy”, Centre for handlooms information and Policy.
6. Yousuf Tawheed and et. al, 2013, Socio-Economic Profile of Silk Weavers: A Micro-Level Study of Srinagar City, European Academic Research, Vol. (1) 3, pp. 319-331
7. Devi, M.S. (2011), Female Work Participation Rates in India, An Analysis, Rao D.P.(Eds)Status of Women in Education, Employment and Social Exclusion, Serials Publications, New Delhi,pp.141-159.
8. Ahmad Nisar, (1987),Problems and Management of Small Scale and Cottage Industries, Deep and Deep Publications
9. Sinha,R.(2005), Status of Women and Economic Development -Some Econometric Evidence, RBSA Publishers,pp.25-49.
10. Goswami,T.D (1960), The Handloom and Women, Khadi Gramodyog, Vol.7,No.2,pp.76-78
11. Srinivasachari P.(1965),The Handloom Industry, Khadi and Village Industries Commission Publication, pp.1-12.
12. Dr. Fatma Mehar Sultana and Mehrun Nisa(2017), Female work participation and health status in power loom sector: A case study of Mau city, International Journal of Applied Research 2017; 3(6): pp.451-456

RRIJM 2015, All Rights Reserved